

शबलित वि. (तत्.) 1. विविध प्रकार के रंगों से युक्त 2. चितकबरा 3. अनेक रंगों में रंगा हुआ।

शबली स्त्री. (तत्.) दे. शबला।

शबाना वि. (फा.) 1. जो रात का हो 2. रात को (अर.) पुं. 1. रात का भोजन 2. रात की बची बासी रोटी 3. वस्त्र 4. मजदूरी।

शबाब वि. (फा.) 1. यौवन, युवावस्था, जवानी 2. चढ़ती जबानी का मादक सौंदर्य 3. किसी वस्तु, गुण आदि का उत्तम प्रभाव।

शबाहत स्त्री. (अर.) 1. आकृति, रूप, शकल 2. सदृशता, समता 3. एकरूपता, हमशक्ली।

शबिस्तान पुं. (फा.) 1. रात में रहने का स्थान 2. किसी राजा या बादशाह का शयनकक्ष 3. शयनागार, ख्वाबगाह 4. अंतःपुर 5. पलंग 6. मस्जिद में रात को इबादत करने का स्थान।

शबीना वि. (फा.) 1. रात की बची हुई खाद्य वस्तु, बासी 2. रात का, रात्रीय 3. रमजान के महीने में एक रात में समाप्त हो जाने वाला कुरान का पाठ।

शब्द पुं. (तत्.) 1. वर्णसमूह द्वारा निर्मित और व्यक्त ध्वनि 2. आवाज 3. प्राप्त व्यक्त।

शब्दकार वि. (तत्.) 1. शब्द या ध्वनि करने वाला 2. नए शब्दों की रचना करने वाला, शब्द प्रणेता 3. लेखक।

शब्दकोश पुं. (तत्.) 1. वह ग्रंथ जिसे शब्दों के एक निर्धारित वर्णक्रमानुसार उनकी व्युत्पत्ति, अर्थ, पर्याय, प्रयोग आदि अपेक्षित सूचनाएँ प्रदत्त की गई हो, अभिधानकोश, शब्दकोष।

शब्दकोशकारिता स्त्री. (तत्.) 1. शब्दकोश रचना करने की प्रवृत्ति 2. शब्दकोश रचने, करने का भाव 3. कोश रचना, कोशकारिता।

शब्दकोष वि. (तत्.) दे. शब्दकोश।

शब्दक्रीडा स्त्री. (तत्.) शिक्षा. शिक्षणप्रक्रिया में शिक्षण का एक वह प्रकार जिसमें शब्दों को

पहचानने उनके अर्थ समझने का खेल जो खेल-खेल में पढ़ना सिखाने के लिए होता है।

शब्दगत वि. (तत्.) 1. जो शब्द में निहित हो 2. शब्द संबंधी जैसे- शब्दगत भाव, वैशिष्ट्य।

शब्दग्राम वि. (तत्.) शब्दों का समूह, शब्दसमूह।

शब्दघटनवृत्ति स्त्री. (तत्.) वाग्यवहार में नए नए शब्दों की रचना या गढ़ने की प्रवृत्ति या कुशलता।

शब्द-चातुर्य पुं. (तत्.) 1. शब्द प्रयोग करने की कुशलता, प्रवीणता 2. वाक्कला।

शब्दचित्र पुं. (तत्.) काव्य. 1. एक शब्दालंकार जिसमें छन्दरचना में ऐसे वर्णों का विन्यास हो जिससे एक विशेष चित्र बन जाए 2. किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना का शब्दों द्वारा ऐसा वर्णन जिससे एक सुंदर सजीव चित्र उभरकर आए।

शब्दचोर वि. (तत्.) किसी दूसरे लेखक या कवि की रचना से शब्द या वाक्यांश चुराकर अपनी रचना या लेख आदि में प्रयोग करने वाला।

शब्दजाल पुं. (तत्.) शब्दों का जाल, वाणी का आडंबर, वागाडंबर।

शब्ददोष पुं. (तत्.) काव्यशास्त्र में वर्णित काव्य-दोषों का एक प्रकार, काव्य में प्रयुक्त पदों में पाया जाने वाला एक दोष।

शब्दन वि. (तत्.) 1. ध्वनि करने वाला, शब्द करने वाला 2. कोलाहल, आवाज, पुकारना, बुलाना।

शब्दनृत्य पुं. (तत्.) नृत्य का एक प्रकार।

शब्दप्रपंच पुं. (तत्.) 1. शब्दों का जाल, वाणी का आडंबर 2. किसी वर्ग अथवा व्यवसाय विशेष में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली जो सामान्य शब्दावली से पूर्णतः भिन्न हो और अन्यो को समझने के लिए कठिन अथवा दुर्बोध हो।

शब्दप्रमाण पुं. (तत्.) किसी कथन पर आधारित प्रमाण, मौखिक प्रमाण दर्श. आप्त पुरुष का वचन, आप्तप्रमाण।